भेड़िए को दुष्ट क्यों कहते हैं, चलो पता लगाएँ

नीतू यादव

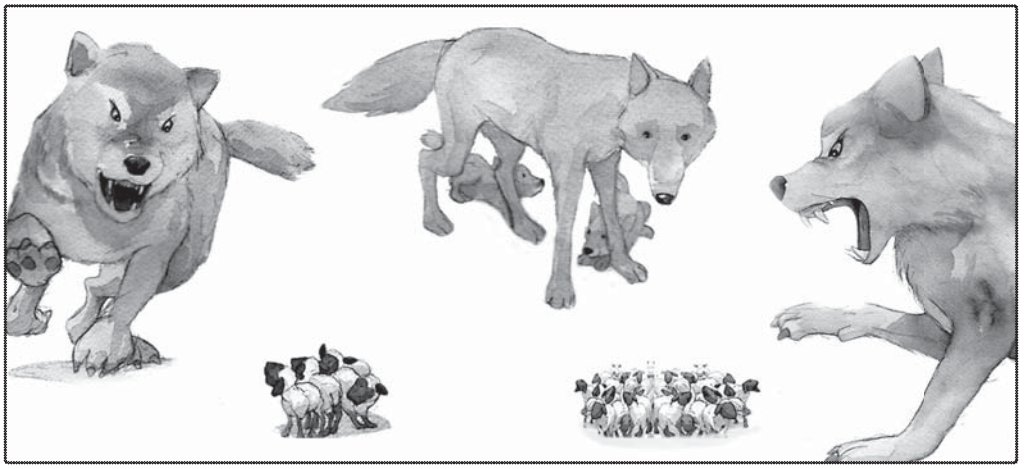

भेड़िए को दुष्ट क्यों कहते हैं, इस आकर्षक शीर्षक और आवरण वाली किताब का लेखन व चित्रांकन कॉन्ता ग्रेबाँ ने किया है। 'एकलव्य' ने इसे हिन्दी में अनूदित और प्रकाशित किया है। अच्छे साहित्य का गुण होता है कि वह सिर्फ़ वो न दिखाए जो उसका शाब्दिक अर्थ हो बल्कि उसमें सांकेतिक अर्थ भी हों। इस कहानी के इसी गुण की वजह से मुझे लगा कि बच्चों के साथ बातचीत करते हुए इस कहानी को सुनाना अच्छा रहेगा। हमारी लाइब्रेरी समुदाय में चलती है, उसमें मिली-जुली उम्र के बच्चे शामिल होते हैं। इसलिए यह समझने के भी अवसर थे कि 5-6 वर्ष तक के छोटे बच्चे इन चर्चाओं में शामिल होंगे या नहीं।

कहानी एक नन्हे मेमने की ख़बर से शुरू होती है। फिर छोटे-छोटे जानवरों, सूअर, हंस, चूहों के इर्द-गिर्द घूमती है। अपनी ही तरह के नन्हे जीव बच्चों के क़रीबी होते हैं, वे उनके बारे में जानना, सुनना पसन्द करते हैं।

भेड़िया मेमने से काफ़ी बड़ा है। अजनबियत के चलते भेड़िए की मासूम मुस्कुराहट भी नन्हे मेमने के डर की वजह बन जाती है। इसी से मन में यह ख़्याल आया कि बच्चों से पूछूँगी कि क्या आपके साथ भी कभी ऐसा हुआ कि आपको देखकर कोई मुस्कुराया और आप डर गए?

5 से 6 मिनट की चर्चा में बच्चों से उनके आसपास दिखाई देने वाले जानवरों के नाम, उनकी आदतों व स्वभाव के बारे में पूछा। बच्चों को किस जानवर से डर लगता है। अचानक वही जानवर दिख जाए और आसपास कोई न हो, वो क्या करेंगे? जैसे– कुत्ता, गाय, बकरी, साँप आदि। किताब दिखाते हुए पूछा कि इस कहानी में क्या होगा? किसी ने कहा, 'एक भेड़िया होगा वो सबको खा जाएगा।' किसी ने कहा, 'बकरी का बच्चा किसी को ढूँढ़ रहा है', फटाफट उत्तर आ रहे थे। इस तरह के कुछ सवालों के जवाब सुनने के बाद मुझे लगा कि अब बच्चों में कहानी सुनने के लिए पर्याप्त उत्सुकता बन गई है।

बच्चों को चित्र दिखाते हुए हावभाव के साथ कहानी सुनाना शुरू किया। कहानी में एक के बाद एक क्रम से क़िस्से आपस में जुड़े हैं इसलिए बीच में अनावश्यक प्रश्न नहीं पूछे। हाँ, जहाँ आवश्यक लगा और सस्पेंस को बनाए रखने के लिए यथास्थान अब क्या होगा?, कौन क्या करेगा?, जैसे प्रश्न ज़रूर पूछे। इस बात का बराबर ध्यान रखा कि सवाल-जवाब का इतना भी विस्तार न हो कि कहानी का तारतम्य ही बिगड़ जाए या

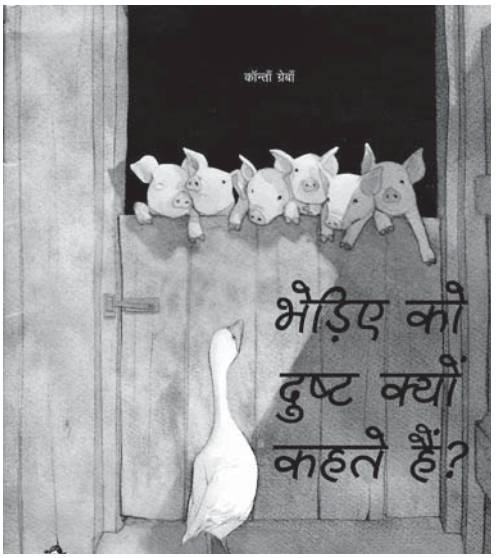

अटपटा हो जाए। जहाँ महसूस हुआ कि बच्चों को समझने में मुश्किल आ रही है, वहाँ बात स्पष्ट की। जैसे– 'रोमांचक किस्सा' व 'बढ़ा-चढ़ा कर बताना', 'राइडिंगहुड', 'विशालकाय', 'ख़ूँख़ार', 'भाले जैसे दाँत', आदि शब्द बच्चों को समझ नहीं आ रहे थे, इनके अर्थ स्पष्ट किए। पर इस बात का विशेष ध्यान रखा कि जब तक बच्चों ने किसी शब्द का प्रत्यक्ष तौर पर अर्थ नहीं पूछा, शब्द का अर्थ नहीं बताया क्योंकि इससे सन्दर्भ की सहायता से अर्थ समझने की बच्चों की क्षमता में कमी आने लगती है। बच्चों को 'विशालकाय' शब्द समझ नहीं आया तो उसे हावभाव से स्पष्ट करने की कोशिश की। और चूँकि 'राइडिंगहुड' को हम हावभाव से स्पष्ट नहीं कर सकते थे तो बच्चों को अनुमान लगाने के मौक़े दिए, बाद में उसके बारे में बताया।

अन्त में बच्चों से पूछा कि कहानी में क्या अच्छा लगा, क्या नहीं, और चर्चा के लिए कुछ सवाल पूछे :

- भेड़िया तो सिर्फ़ सलाम ही कर रहा था पर मेमना उसके नुकीले दाँतों से डर क्यों गया? उसको ऐसा क्यों लगा कि वह उसे खाना चाहता है?
- सभी जानवर जब उस क़िस्से को किसी दूसरे को बताते तो वो उसमें कोई नई या झूठी बात क्यों जोड़ देते थे?
- अगर जो बात मेमने ने कही वो ही आख़िर तक होती तो क्या होता?
- बच्चों को जो जानवर अच्छा लगा उसकी जगह वे ख़ुद होते तो क्या करते?

इन सवालों पर चर्चा के बाद एक गतिविधि की जिसमें कहानी में बच्चों को जो जानवर पसन्द आया उसके मुखौटे बनवाए। उनकी आवाज़ या कहानी में बोले गए संवादों के अंश बच्चों ने बोले। इस गतिविधि के दौरान यह महसूस हो रहा था कि बच्चे उन पात्रों के ज़रिए कहानी में जीवन्त रूप से शामिल हो रहे थे, जिससे कि कहानी की मज़ेदारी में और भी इज़ाफ़ा हुआ।

कहानी की योजना 10-12 साल के बच्चों को ध्यान में रखकर बनाई गई थी लेकिन 17-18 साल के किशोरों ने भी इस चर्चा में उतनी ही दिलचस्पी से भाग लिया, साथ ही 5-6 साल के कुछ बच्चे भी चर्चा में जुड़े।

मैंने जब यह कहानी बच्चों को सुनाई तो बच्चों ने कई ऐसी घटनाएँ बताईं जब छोटी बात को बढ़ा-चढ़ा कर बताया गया। कुछ घटनाओं में बच्चों ने ऐसे लोगों के बारे में भी बताया जो एकदम सीधे-सादे दिखते हैं फिर भी उनसे डर लगता है। और कुछ बातें बहुत गम्भीर थीं, जैसे–

सात साल के विवेक ने बताया, 'एक अंकल जो हमारे घर हमेशा आते हैं। जब भी वो हँसते

हैं तो मुझे बहुत डर लगता है।' मैंने कभी कल्पना ही नहीं की थी कि एक छोटे बच्चे के लिए हँसने जैसी बात भी डर का सबब बन सकती है।

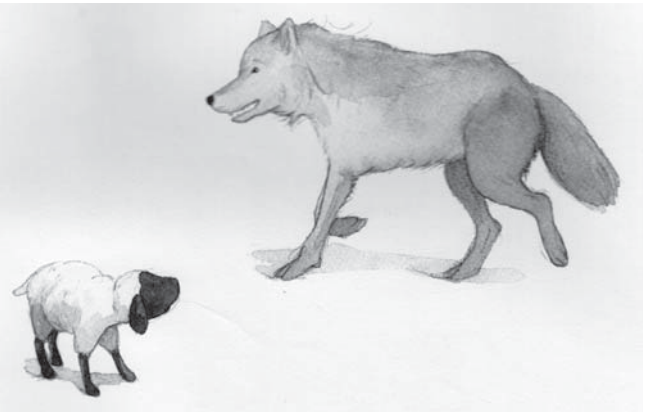

छह साल की पूजा ने बताया कि उसे उन लोगों से डर लगता है जो पाड़ा खाते हैं। पूजा की यह बात सुनकर मन में सवाल उभरने लगा कि एक छोटी बच्ची के दिमाग़ में ये बात कैसे आई होगी?

पाँच साल की परी ने बताया कि उसे अपने चाचा से डर लगता है। वो गाल में चिमटी लेते हैं, खिलाते-खिलाते काट खाते हैं। मैं उनके पास नहीं जाती। इससे समझ में आया कि बहुत-से बच्चों को बड़ों का उनके साथ इस तरह खेलना अच्छा नहीं लगता है।

बारह साल की बबीता ने बताया, 'एक बार जब यह बात चल रही थी कि बच्चा चोर घूम रहे हैं तो मुझे स्कूल आते-जाते हर कार से डर लगता था। मैंने भी घर में सबको यह कह दिया था कि आज जब मैं स्कूल से घर आ रही थी तब एक कार वाला मुझे बुला रहा था। वो मुझे किडनैप करना चाहता था। फिर यही बात मेरे दोस्तों ने भी उनके घर बताई, फिर डर से घर वालों ने कई दिन स्कूल नहीं भेजा क्योंकि स्कूल घर से दूर है। बाद में ख़ुद सोच नहीं पाई कि कैसे सबको बताऊँ कि मैंने झूठ बोला था।'

बच्चों ने कहानी बहुत पसन्द की। 'बढ़ा-चढ़ाकर बताना' शब्द तो कुछ बड़े बच्चों की ज़बान पर ऐसा चढ़ा कि वे अगले कई दिनों तक जुमले की तरह इसका प्रयोग करते रहे।

बच्चों के अनुभवों को सुनने से समझ आता है कि बच्चे अफ़वाहों से प्रभावित ही नहीं होते बल्कि उनमें शामिल भी होते हैं। किसी जाति विशेष के लोगों से डरना और किडनैप करने वाली बातें इसकी पुष्टि करते हैं कि बच्चे सुनकर ही बातों को सही मानने लगते हैं और डर उनके मन में घर बनाने लगता है। इस तरह के डर उनके मानसिक और सामाजिक विकास में बाधा बनते हैं। बच्चे बचपन से ही पूर्वाग्रहों के साथ बड़े होते हैं। बड़े हो जाने पर ये बातें उनके मन में इतने गहरे बैठ जाती हैं कि वे बिना तर्क किए ही धार्मिक कट्टरता व अन्धविश्वास जैसी ग़लत बातों को सही मानने लगते हैं।

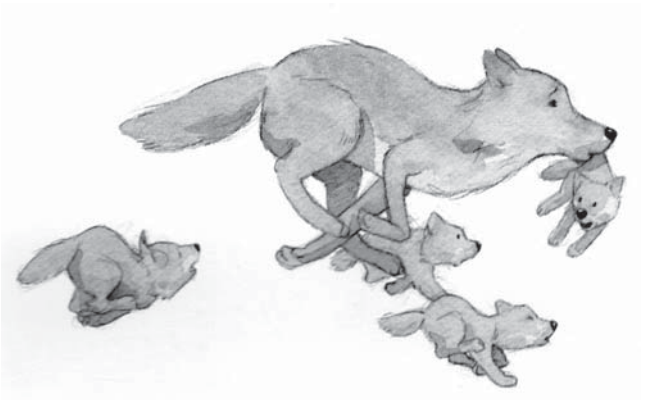

कहानी पढ़ने में मज़ेदार तो है ही, कहानी का सामाजिक परिप्रेक्ष्य भी समझ आता है कि एक छोटी-सी बात कैसे बड़ी अफ़वाह बन जाती है। कैसे एक आम भेड़िया,

इतना दुष्ट, ख़ूँख़ार, दरिन्दा, राक्षस बन गया कि ख़ुद अपने-आप को न पहचान सका और अपने-आप से ही डरने लगा। इसी तरह समाज में भी किसी जाति, धर्म, समुदाय के प्रति ग़लत धारणाएँ बन जाती हैं। कई बार इस तरह की अफ़वाहें घटिया राजनीति करने वाले लोगों के द्वारा भी फैलाई जाती हैं, जिससे सामाजिक विरोधाभास बढ़ने लगते हैं। कभी-कभी वे किसी व्यक्ति की प्रताड़ना के रूप में सामने आते हैं और कभी जातिगत या धार्मिक समूहों के बीच दंगे-फ़साद के रूप में।

इस अनुभव के आधार पर यह कहा जा सकता है कि बचपन से ही अगर बच्चों को इस तरह का साहित्य उपलब्ध हो और उसपर उचित चर्चाएँ होती रहें तो बच्चों में सामाजिक विभिन्नता के प्रति अच्छी समझ और संवेदनशीलता विकसित की जा सकती है। भेड़िए के ख़ूँख़ार और दरिन्दे वाले परिदृश्य के साथ ही उसे एक सामान्य जीव मान पाना जो एक ख़ास प्रकृति के साथ पैदा व विकसित होता है, इस बात के लिए स्वीकृति बनाना भी आवश्यक है।

सभी चित्र एकलव्य प्रकाशन की किताब 'भेड़िए को दुष्ट क्यों कहते हैं' से साभार

नीतू यादव 2006 से शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत हैं। विशेष रूप से पूर्व प्राथमिक एवं प्राथमिक कक्षाओं में भाषा और गणित शिक्षण को अर्थपूर्ण, बालकेन्द्रित और मनोरंजक बनाने के लिए प्रयास किए हैं। वर्तमान में स्वतंत्र रूप से बतौर बाल पुस्तकालय प्रशिक्षक कार्य कर रही हैं। शोध कार्य, शैक्षिक और रचनात्मक लेखन में रुचि है।

सम्पर्क : neetu.yadav23@yahoo.in